दक्षिण भारतीय सिकाडा प्रजाति को मिली नई पहचान

हाल ही में जीवों के वर्गीकरण संबंधी अनुसंधान में आमतौर पर **दक्षिण भारत में पाई जाने वाली सिकाडा प्रजाति** के संबंध में एक महत्त्वपूर्ण खोज का खुलासा किया गया है।

- पहले इसे **मलेशियाई प्रजाति पुराना टिग्रीना (Purana Tigrina)** समझ लिया गया था लेकिन अब इस सिकाडा की पहचान **पुराना चीवीडा** नामक एक विशिष्ट प्रजाति के रूप में की गई है।
- यह अध्ययन **पारिस्थितिक आकलन के लिये सिकाडा के वितरण के संभावित प्रभावों** पर भी प्रकाश डालता है।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष:

- पुराना चीवीडा का वितरण **दक्षिण भारत में गोवा से कन्याकुमारी तक उष्णकटिबंधीय सदाबहार जंगलों** में विस्तृत है।
- यह खोज सिकाडा प्रजाति के बीच उच्च स्तर की स्थानिकता का समर्थन करती है।
- **विभिन्न क्षेत्रों में सिकाडा की घटती उपस्थिति मृदा की गुणवत्ता और वनस्पति में गिरावट** का संकेत दे सकती है।

सिकाडा:

- **परिचय:**
  - सिकाडा वे कीड़े हैं जो **हेमिप्टेरा** क्रम और सुपरफैमिली **सिकाडोइडिया** से संबंधित हैं।
    - हेमिप्टेरान कीड़े, जिन्हें **वास्तविक बग** भी कहा जाता है, अपने माउथपार्ट का उपयोग भोजन खाने के लिये करते हैं तथा उनके दो जोड़े पंख होते हैं।
  - उनकी **आँखें बड़ी, पारदर्शी पंख और आवाज़ तेज़** होती है जो विशेष अंगों द्वारा उत्पन्न होती है जिन्हें टिम्बल (Tymbals) कहा जाता है।

- **आहार पैटर्न और जीवन चक्र:**
  - सिकाडा ज़्यादातर शाकाहारी होते हैं और **पौधों से निकलने वाले रस/तरल पदार्थ का सेवन करते** हैं।
  - उनका जीवन चक्र जटिल होता है, **अधिकांश समय वे भूमि के अंदर ही बढ़ते हैं** और जब बड़े होते है तब बाहर निकलते हैं परंतु यह अवधि तुलनात्मक रूप से छोटी होती है।
- **प्राकृतिक आवास:**
  - **अधिकांश सिकाडा कैनोपी के आसपास रहते हैं और बड़े पेड़ों वाले प्राकृतिक जंगलों** में पाए जाते हैं। **अंटार्कटिक को छोड़कर ये हर महाद्वीप** में पाए जाते हैं।
  - **भारत और बांग्लादेश सामान्यतः सिकाडा की विविधता में दुनिया में सबसे उच्च स्थान** रखते हैं, इसके बाद **चीन** का स्थान है।
- **महत्त्व:**
  - सिकाडा जैवविविधता के लिये महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वे कई**परभक्षियों को भोजन प्रदान करते हैं, पुष्पों के परागण में सहायता करते हैं, मृदा को उपजाऊ बनाते हैं**, पोषक तत्त्वों का पुनर्चक्रण करते हैं और पर्यावरणीय स्वास्थ्य का संकेतक के रूप में कार्य करते हैं।
- **प्रमुख खतरा:**
  - **मानव विकास गतिविधियाँ** उन वृक्षों की संख्या को कम कर देती हैं जिन पर सिकाडा भोजन और प्रजनन के लिये निर्भर करते हैं।
  - जलवायु परिवर्तन **सिकाडा के उद्विकास की अवधि और समन्वय को बाधित कर सकता है।**
  - **कीटनाशक, शाकनाशी व कवकनाशी मृदा एवं जल को प्रदूषित करते हैं** तथा सिकाडा और उनके मेज़बान पौधों के स्वास्थ्य व अस्तित्व को प्रभावित करते हैं।

[स्रोत: द हिंदू]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/south-indian-cicada-species-gets-a-new-identity